कवि उमेशचंद्र नील से बातचीत पर आधारित जनकदेव जनक की भेंटवार्ता

जनकदेव जनक

तुम नहीं तो अपनी छाया आने दो, गम के गीत गाने दो...
कवि उमेशचंद्र नील से बातचीत पर आधारित जनकदेव जनक की भेंटवार्ता
ऊपर से है जगरमगर
नीचे देखो तो करिया,
सिंदरी बोकारो भूल जाओगे
एक बार देख लो झरिया....
झारखंड के झरिया कोयलांचल की रत्नगर्भा धरती सदा से उर्वरा रही है. उसके गर्भ में ब्लैक डायमंड का भंडार है. उसने अपने दामन में सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक,राजनीतिक, कला संस्कृतिक और साहित्यिक परिवेश को थाम रखा है. जिनमें साहित्य विधा के गद्य पद के कलमकारों की कमी नहीं है. उन्ही में एक नाम वयोवृद्ध कवि उमेशचंद्र नील का है, जिनकी श्रृंगार रस की रचनाएं साहित्य प्रेमियों को बरबस आकर्षित करती है.उनकी प्रसिद्ध रचना 'फूलो वाली' आज भी युवा दिलों की धड़कन है-,
'फूलो वाली आज तुम कहां चली,
अनुपम शोभा लेकर खिलखिला रही.
तुम नहीं तो अपनी छाया ही आने दो,
अगर नहीं आती तो गम के गीत गाने दो.....'
कवि नील कहते हैं कि वर्ष 1970 में रोजगार की तलाश में भागलपुर से झरिया पहुंचा था. इसी दौरान लक्ष्मीनिया मोड़ झरिया में वरीय पत्रकार व साहित्यकार बनखंडी मिश्र से मुलाकात हुई थी. उनके व्यक्तित्व व कृतित्व से बहुत प्रभावित हुआ था. उनके निवास स्थान रंजन भवन में पत्रकारों

और साहित्यकारों का गोष्ठियां जमती थी. जहां उनका सान्निध्य पाकर मन मुकुंद मुसकुरा उठता था. वही मिश्रा जी से साहित्यिक प्रेरणा पाकर जो कदम आगे उठा, कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा. पहला काव्य संग्रह'शैवालिनी' का प्रकाशन श्रद्धेय बनखंडी मिश्र ने ही किया. उसके बाद बिहार भूमि चास, आवाज, जनमत, दैनिक चुनौती, अमृत वर्षा, धनबाद रश्मि, बिहार आब्जर्वर ,आर्यावर्त, प्रदीप, सन्मार्ग, प्रभात खबर, दैनिक जागरण आदि पत्र पत्रिकाओं में विभन्न रचनाएं छपी है.

कवि नील अपने कॉलेज के दिनों को याद करते हुए कहते हैं कि 1963 के आस पास मुंगेर के एक काव्य गोष्ठी में गीतकार गोपाल सिंह नेपाली से भेंट हुई थी. उन दिनों उनके गीतों की महक मुंबई तक पहुंच चुकी थी. उनसे मिलकर अपनी कई रचनाएं सुना डाली. वे काफी प्रसन्न व अहलादित हुए. उसके बाद उनसे पत्राचार होने लगा. जब आठवीं कक्षा में पढ़ता था,उसी समय पहली कविता लिखी थी,जो स्कूल की स्मारिका में प्रकाशित हुई थी.

पत्रकारिता व ट्यूशन भी किया: कहा कि शुरू के दिनों में दिन में बच्चों को ट्यूशन पढ़ाता था और शाम को पत्रकारिता. जनमत, दैनिक चुनौती, बिहार भूमि, अमृत वर्षा,साप्ताहिक इम्पीरियल आदि में समाचार संपादन का कार्य किया. उसके बाद अपना साप्ताहिक 'नील कलश्' का प्रकाशन किया. लेकिन अर्थाभाव के कारण पत्र अनियमित रहा.

प्रोफाइल :

नाम-उमेशचंद्र नील

जन्म- 2 फरवरी 1942

पिता-हीरा लाल झा (शिक्षक)

पैतृक गांव- डिगरियापुर गांव, जिला भागलपुर, बिहार.

वर्तमान पता-भगतडीह,झरिया ,धनबाद

पत्नी-स्व. सचि देवी व स्व रंभा देवी

पुत्र-उज्जवल कुमार झा,अकित झा व पुत्री हेम लता

शिक्षा-मैट्रिक मुंगेर हाइ स्कूल से 1962, बीए हिंदी ऑनर्स मुंगेर कॉलेज, मुंगेर से 1967. एमए

काव्य गुरु-गोपाल सिंह नेपाली

साहित्य से जुड़ने की प्रेरणा- वरीय पत्रकार व साहित्यकार बनखंडी मिश्र से

प्रसिद्ध रचना-फूलो वाली(काव्य संग्रह),मुर्गे की पाठशाला(हास्य व्यंग्य),जल तरंग(काव्य संग्रह),नील रामायण, कृष्ण काव्य,

प्रकाशन: साप्ताहिक पत्र 'नील कलश' का प्रकाशन